14

जब अच्छे मसीही साथ नहीं चल सकते[1]

(फिलिप्पियों 4:1-3)

उम्मीद है कि यह बताकर कि अच्छे मसीही भी कई बार साथ नहीं चल पाते, मैं आपको चौंकाऊंगा नहीं। जहां शमा होगी, परवाने वहीं होंगे। जहां कुत्ते हैं, पिस्सू वहीं होंगे। जहां लोग हैं गलतफहमियां और मतभेद वहीं होंगे-चाहे वे लोग मसीही या अच्छे मसीही ही हों (देखें प्रेरितों 15:36-40) प्रश्न यह नहीं कि "*यदि* मसीही लोग असहमत हों तो हम क्या करें?" बल्कि यह है कि "*जब* मसीही लोग असहमत हों तो हम क्या करें?

यह अध्ययन फिलिप्पी की दो मसीही बहनों के इर्द-गिर्द घूमता है जो साथ नहीं चल रही थीं। (फिलिप्पियों 4:2)। पहले पौलुस ने फिलिप्पी के मसीही लोगों के एक होने के महत्व पर ज़ोर दिया (1:27; 2:2)। कुछ लोगों का मत है कि यह सामान्य शिक्षाएं विभाजन के इस विशेष मामले तक जा रही थीं। यह सही है या नहीं, अध्याय 4 की पहली तीन आयतें साथी मसीही लोगों के साथ मिलकर रहने के महत्व को प्रकाशमान करती हैं। पौलुस द्वारा इस हालात से निपटने का ढंग हमें यह जानने में सहायक हो सकता है कि मसीह में भाइयों और बहनों के अलग होने पर क्या किया जाए।

सच्चे मन से तारीफ़ (4:1)

पहले तो पौलुस ने सकारात्मक माहौल बनाया। उसने दो परेशान बहनों सहित फिलिप्पी के सब मसीही लोगों को अपने प्रेम का यकीन दिलाया और आज्ञा देने से पहले उसने तारीफ़ की:[2] "इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में स्थिर रहो" (आयत 1)। बाइबल की कोई और आयत इतने अपनेपन और लगाव से नहीं भरी:

- "भाइयो"-ये लोग पौलुस के भाई और बहनें थे। वे एक ही परिवार के लोग थे जिनका एक ही पिता था।
- "प्रिय"-वे पौलुस के प्रिय भाई और बहनें थे। अनुवादित "प्रिय" यूनानी शब्द (*agapetos* का एक रूप) "प्रेम" के लिए विशेष शब्द *agape* से लिया गया है। परमेश्वर ने अपने पुत्र के सम्बन्ध में इस शब्द का इस्तेमाल किया (मत्ती 3:17)। यह ज़ोर देने के लिए कि वह इन भाइयों से *कितना* प्रेम करता था, पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल दो बार किया।
- "जिनमें मेरा जी लगा रहता है"-वे उसके मन में रहने वाले प्रिय भाई और बहनें थे।

इस वाक्यांश के लिए यूनानी शब्द (*epithptos*) का इस्तेमाल इपफ्रुदीतुस के घर लौटने की तड़प का वर्णन करने के लिए किया गया था (फिलिप्पियों 2:26)। पौलुस को फिलिप्पी में अपने मित्रों से मिलने की ''याद सता रही'' थी।

- ''जो मेरे आनन्द और मुकुट हो''–वे उसके मन में रहने वाले, प्रिय भाई और बहनें थे, जिनसे उसके चेहरे की रौनक और उसके मन का गर्व बढ़ जाता था, क्योंकि वे उसका ''आनन्द'' थे। उनसे उसे आनन्द मिलने की बात पर विचार करें (देखें 1:3, 4)। वे उसका मुकुट भी थे यानी वह उन्हें अपने जीवन की शानदार प्राप्ति के रूप में मानता था। यहां इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द (*stephanos*) विजय और जश्न के मुकुट का अर्थ देता है (एक अलग यूनानी शब्द, *diadem*) शासक के मुकुट का अर्थ देत है।

क्या आप दो मसीही लोगों को मिलाने में सहायता करना चाहते हैं? उनकी कमियां गिनाकर उन्हें मिलाने की शुरुआत न करें। यह विश्वास दिलाते हुए आरम्भ करें कि आपको उनकी सचमुच में परवाह है। उनकी इच्छा को प्रभावित करने से पहले उनके मनों को छूना आवश्यक है।

भावुक मिलान (4:2, 3)

फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस का मुकुट यानी विजय का लारेल की पत्तियों वाला हार था, पर उस मुकुट में एक ''कांटा'' था;[3] दो बहनें जिनमें आपस में गम्भीर असहमति थी। प्रेरित ने उस समस्या की बात अपने पारम्परिक अन्दाज में की: ''मैं यूओदिया को भी समझाता हूं,[4] और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें'' (आयत 2)। ''सुन्तुखे'' का अर्थ ''सौभाग्यशाली'' हो सकता है, जबकि ''यूओदिया'' का अर्थ ''समृद्ध'' हो सकता है। *अफ़सोस,* कि उस समय में वे आत्मिक *दिवालिएपन* के कगार पर थीं। ''सुन्तुखे'' का अर्थ ''मिलनसार'' भी हो सकता है जबकि ''यूओदिया'' का अर्थ ''मीठी महक'' भी हो सकता है। परन्तु इस समय वे मिलनसार के उलट और झगड़े की अप्रिय गंध को फैला रही थी।

दूसरी बात जो पौलुस ने की, वह समस्या का सामना करना था। आम तौर पर नाराज़ मित्रों के गले में बाहें डालकर उन्हें केवल यह कह देना कि आप उनसे प्रेम करते हैं काफ़ी नहीं होता। आपको उन्हें अपने मतभेदों को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करना भी आवश्यक होता है।

सकारात्मक पक्ष में

यूओदिया और सन्तुखे कौन थीं? हम नहीं जानते (कइयों ने इन दो स्त्रियों को फिलिप्पी कलीसिया के यहूदी और अन्यजाति दो गुटों का प्रतिनिधि बनाने की कोशिश की है, परन्तु यह मानने का कोई कारण नहीं है कि वे दो व्यक्तियों से बढ़कर कुछ थीं जो मिलकर नहीं चल रहे थे।) सकारात्मक पक्ष में, हम उनके बारे में इतना जानते हैं कि पौलुस ने इन स्त्रियों को ''मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में परिश्रम किया'' के रूप में स्नेहपूर्ण बात की[5] (आयत 3ख)। ''मेरे साथ परिश्रम किया'' का अनुवाद दो यूनानी शब्दों (*sunethlesan moi*) से किया गया है जिसका अर्थ ''मेरे साथ संघर्ष किया'' है। कुछ लोग इसे पढ़कर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ये स्त्रियां

पौलुस के साथ सार्वजनिक रूप में प्रचार करती थीं। यह तो प्रेरित की उस बात का विरोध होगा जो उसने सार्वजनिक आराधना सभाओं में स्त्रियों के खामोश रहने के बारे में अन्य स्थानों पर लिखी (1 कुरिन्थियों 14:34, 35; देखें 1 तीमुथियुस 2:8-12)।

यूओदिया और सुन्तुखे ने प्रचार करने के अलावा और ढंगों में ''सुसमाचार को फैलाने'' में पौलुस ''का साथ दिया'' हो सकता है। अध्याय 1 में पौलुस ने, फिलिप्पियों के ''पहिले दिन से लेकर आज तक *सुसमाचार के* [फैलाने] *में* मेरे *सहभागी*'' (आयत 5) होने की बात की। यह पौलुस के साथ सुसमाचार प्रचार करने की नहीं, बल्कि प्रचार में उनकी आर्थिक सहायता की बात की। इसी अध्याय में पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के सभी सदस्यों से *''सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते''* दृढ़ रहने का आग्रह किया (आयत 27)। बेशक कोई यह निष्कर्ष नहीं निकालेगा कि प्रेरित मण्डली में हर किसी को वचन सुनाने की आज्ञा दे रहा था (सब पुरुषों में प्रचार करने का गुण नहीं होता)।

अधिकतर प्रचारक उन स्त्रियों की बात कर सकते हैं जिन्होंने प्रचार तो नहीं किया पर इसके बावजूद उन्होंने सुसमाचार को फैलाने में उनके संघर्षों में उनका साथ दिया है। मैं अपनी मां और अपनी पत्नी से आरम्भ करके उन विश्वासी महिलाओं की सेना की एक लम्बी सूची बना सकता हूं जिन्होंने मुझे अलग-अलग प्रकार से प्रोत्साहित किया और मेरी सहायता की।

वचन को अकेले में किसी को बताने सहित स्त्रियां पुलपिट में खड़ा होने के बजाय स्त्रियां कई अन्य प्रकार से सुसमाचार को फैला सकती हैं (देखें तीतुस 2:3-5; प्रेरितों 18:26)। फिलिप्पी की कलीयिसा के आरम्भ से स्त्रियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। सबसे पहले मसीही बनने वाले लोग एक स्त्री और उसका घराना ही था (प्रेरितों 16:13-15)। उस स्त्री (लुदिया) ने पौलुस और उसके साथियों के लिए तुरन्त अपने घर के दरवाजे खोल दिए और वह घर कलीसिया के इकट्ठा होने का स्थान बन गया (प्रेरितों 16:40)। बेशक उसके उदाहरण से मण्डली की अन्य स्त्रियों को प्रभु के काम में भाग लेने की प्रेरणा मिली।

यूओदिया और सुन्तुखे के बारे में वचन पाठ में दिया एक और सकारात्मक तथ्य यह है कि उनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे गए थे (आयत 3; देखें प्रकाशितवाक्य 21:27)। अपने साथ संघर्ष में साथ देने वाली दो स्त्रियों की बात करते हुए पौलुस को दूसरे लोगों का भी ध्यान आया, जिन्होंने उसके साथ परिश्रम किया था। इस कारण उसने ''क्लेमेंट और मेरे उन और सहकर्मियों समेत'' शब्द जोड़ दिए (फिलिप्पियों 4:3ग)। कई लोगों ने इस क्लेमेंट को रोम का प्रसिद्ध क्लेमेंट समझा है जिसका वर्णन बाइबल से बाहर के आरम्भिक मसीही लेखों में मिलता है पर इसका कोई ऐतिहासिक परिमाण नहीं है। यह क्लेमेंट सम्भवतया फिलिप्पी की उसी कलीसिया का सदस्य था, जिसने पौलुस की सहायता की थी।

क्लेमेंट का नाम लेने से प्रेरित को परमेश्वर के और विश्वासयोग्य सेवकों का भी स्मरण आया। किसी को छोड़ देने का जोखिम लेने के बजाय उसने यह वाक्यांश जोड़ दिया: ''और मेरे उन और सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिन के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं'' (आयत 3घ)। ''जीवन की पुस्तक'' विश्वासी लोगों का स्वर्गीय रिकॉर्ड है (देखें लूका 10:20)। मुझे और आपको उन लोगों के नाम पता नहीं होंगे जिनका नाम पौलुस ने लिया पर प्रभु को मालूम है। उनके नाम उसकी ''पुस्तक'' में हैं!

तात्पर्य यह है कि यूओदिया और सुन्तुखे के नाम स्वर्गीय रिकॉर्ड में दर्ज लोगों की सूची में थे। इससे दोनों बहनों के लिए अपने मतभेद मिटाने की कई प्रेरणाएं मिलनी चाहिए थीं: (1) जीवन की पुस्तक में उनके नाम होने की तुलना में, उनकी व्यक्तिगत समस्याएं नगण्य थीं। (2) वे दोनों स्वर्ग की ओर जा रही थीं, जहां केवल मेल ही होगा, इसलिए क्या उन्हें पृथ्वी पर मिलकर नहीं रहना चाहिए था? (3) उन्हें मालूम होना चाहिए था कि उनके नाम ''पक्की सियाही से लिखे गए'' थे। यानी उनके नामों को जीवन की पुस्तक में से ''मिटाया'' जा सकता था (देखें प्रकाशितवाक्य 3:5) यदि वे पौलुस की आज्ञा को नहीं मानतीं।

नकारात्मक पक्ष

यूओदिया और सुन्तुखे के जीवनों का एक सकारात्मक पक्ष था; पर दुख की बात है कि उन्हें याद किए जाने का कारण यह है कि वे मिलकर नहीं चल पाई थीं। उनके जीवनों की यह बात उन में पाई जाने वाली हर भलाई के रद्द होने का खतरा था। मैंने उनकी जगह पर अपने आपको रखने की कोशिश की है। उनके नाम पूरी मण्डली के सामने सार्वजनिक रूप में पढ़े जाने के लिए पत्र में होना कितना अपमानजनक होगा (फिलिप्पियों 1:1)! आपको नहीं लगता कि यह जानकर कि संसार भर में आज भी लोग उनकी समस्या की बातें पढ़ रहे हैं उन्हें परेशानी होगी? उनकी हालत ने मुझे यह पूछने को विवश कर दिया है, ''क्या हो यदि मेरे जीवन पर एक पंक्ति लिख दी जाए-एक पंक्ति जो अब से लेकर दो हज़ार साल तक पढ़ी जाती रहे? वह पंक्ति क्या होगी?'' कितने दुख की बात होगी यदि यह कहना पड़े, ''वह दूसरों के साथ मिल कर नहीं चल पाया''!

पौलुस इन दो स्त्रियों और उनके झगड़े पर इतना ध्यान क्यों दे रहा था? निश्चय ही उसका उद्देश्य अपनी पूर्व सहकर्मियों को परेशान करना नहीं था। ऐसा उसने सम्भवतया इसलिए किया क्योंकि उसे मालूम था कि कलीसिया के दो सदस्यों के बीच की गड़बड़ दो और लोगों के बीच में ... फिर चार और लोगों के बीच में फैलकर ... पूरी मण्डली को संक्रमित कर सकती है। मैंने ऐसा होते देखा है और शायद आपने भी देखा है। दो मसीही लोगों के बीच होने वाली किसी समस्या को उस समस्या के बढ़ने से पहले ही खत्म कर देना चाहिए।

यूओदिया और सुन्तुखे में किस बात का झगड़ा था? निश्चित रूप से यह डॉक्ट्रिन का कोई मुद्दा तो नहीं होगा। कई लेखक डॉक्ट्रिन के मामलों में समझौते की बात सिखाने के लिए फिलिप्पियों 4:2, 3 का इसतेमाल करते हैं पर पौलुस ने फिलिप्पियों को ''जीवन के वचन को पकड़े'' रखने की आज्ञा दी (2:16)। डॉक्ट्रिन की समस्याओं से निपटने के लिए पौलुस आम तौर पर स्पष्ट कर देता था कि समस्या क्या है (देखें रोमियों 6:1, 2) और लोगों की गलती क्या है (देखें 2 तीमुथियुस 2:18)। नहीं, यूओदिया और सुन्तुखे में व्यक्तित्व का झगड़ा होगा। प्रभु के लिए जोशीले कर्मी मज़बूत विचार रखते हैं कि कोई काम कैसे किया जाना चाहिए। ऐसे कर्मियों को इकट्ठा रखें तो उनके बीच पाई जाने वाली असहमतियां स्पष्ट दिखाई देंगी। पचास से अधिक वर्षों के प्रचार के अपने अनुभव में मैंने कलीसिया में बहुत (बहुत अधिक) झगड़ा देखा है। डॉक्ट्रिन पर हर असमति के लिए विचार के सैकड़ों मतभेद होते हैं।

संतुष्टिजनक मिलान (4:2, 3)

हम ने फिलिप्पी की दो बहनों की समस्या पर सामान्य बात की है। अब इसे और ध्यान

से देखने का समय है कि पौलुस ने सम्भावित विस्फोटक स्थिति से कैसे निपटा। हम पहले ही देख चुके हैं कि उसने तारीफ़ करते हुए आरम्भ किया और फिर दोनों बहनों का सामना करने से हिचकिचाया नहीं। आइए उन विचारों में और जोड़ते हैं।

उसने कुछ किया–तुरन्त

पौलुस ने *कुछ* किया। उसने इस उम्मीद से कि अपने आप ठीक हो जाएगा परिस्थिति की उपेक्षा नहीं की। स्पष्टतया जैसे ही उसे पता चला कि उसने पूरी मण्डली के पक्ष लेने की प्रतीक्षा नहीं की।

वह तटस्थ रहा पर चिन्तित

उसने दोनों में से किसी का पक्ष नहीं लिया। उसने दोनों के लिए एक ही शब्द का इस्तेमाल किया: ''मैं यूओदिया को भी समझाता हूं और सुन्तुखे को भी। ...'' इस संदर्भ में ''समझाता हूं'' (यू.: *parakalo*) का अर्थ ''साथ बुलाना,'' ''भीख मांगना, विनती करना, याचना करना, विनती करना'' है।[6]

यह सम्भव है कि इन में से एक स्त्री दूसरी की अपेक्षा फूट की अधिक दोषी है; जैसा कि आम तौर पर होता है। तौभी कुछ हद तक गलती दोनों की थी। जब मेरा भाई कोय और मैं लड़के थे तो हम कई बार झगड़ पड़ते थे (जैसा कि भाई करते हैं)। फिर हमारी मां आती (हमेशा की तरह), हम दोनों विरोध करते, ''पर आरम्भ *इसने* किया था!'' मां यह तय करने की कोशिश नहीं करती थी कि अधिक गलती किसकी है। वह केवल इतना कहती, ''ताली *दो* हाथों से बजती है'' और परिणाम हम दोनों को भुगतने पढ़ते।

जब दो मसीही लोग झगड़ते हैं तो बाइबल बताती है कि उनमें से *प्रत्येक* को सुलह के लिए पहला कदम उठाना चाहिए। जिसे लगता है कि उसके साथ गलत हुआ है उसे आपने भाई के पास जाने की आज्ञा है (मत्ती 18:15)।[7] जिसे लगता है कि उस पर गलत आरोप लगाया जा रहा है उसे भी अपने भाई के पास जाने की आज्ञा है (मत्ती 5:23, 24)। किसी को भी यह कहने का अधिकार नहीं है कि ''उसे *मेरे* पास आना चाहिए।''

पौलुस ने एकता की विनती की–ज़ोरदार ढंग से।

पौलुस ने मतभेदों को मिटाने के महत्व पर ज़ोर दिया। उसने दोनों स्त्रियों को ''एक मन रहें'' का आग्रह किया। एक सुर में गाए जाने वाले गीतों की आवाज़ सुनना कितना सुखद है, वहीं अलग-अलग आवाज़ों को सुनना कितना बुरा लगता है! ''एक मन रहें'' का अनुवाद उन शब्दों से किया गया है जिनका अर्थ ''एक ही [बात]'' (*tu auto*) ''सोचना'' (*phronein*)। 2:2 में ऐसे ही वाक्यांश का अनुवाद ''एक मन रहो'' किया गया था। ''एक मन रहें'' 4:1-9 में पौलुस के अधिकतर निर्देशों की तरह अवश्य माननीय है। एक मन रहना मसीही लोगों के लिए वैकल्पिक नहीं है बल्कि परमेश्वर ने हमें ऐसा करने की आज्ञा दी है!

कई बार मसीही लोगों को लगता है कि उनकी गलत-फहमियों से ''किसी को लेना देना नहीं'' है, पर मण्डली में मुश्किल हर सदस्य की मुश्किल है। असहमतियां न केवल असहमत

होने वालों की हानि करती हैं, बल्कि वे दूसरों पर कलीसिया का गलत असर भी छोड़ती हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 1:13) और अविश्वासियों को पीछे करती हैं (देखें यूहन्ना 17:21, 23)। प्रभु चाहता है कि हम एक-दूसरे के साथ सुलह से रहें (देखें मरकुस 9:50)। ''देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!'' (भजन संहिता 133:1)। एक बात जिससे प्रभु घृणा करता है वह ''भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य'' (नीतिवचन 6:19)।

उसने उन्हें याद दिलाया-सही ढंग से।

पौलुस ने दोनों स्त्रियों को याद दिलाया कि वे दोनों ''प्रभु में'' हैं। ''प्रभु में'' (या इसके समान) प्रेरित द्वारा इस्तेमाल की गई पसंदीदा अभिव्यक्ति थी (देखें फिलिप्पियों 4:1, 2, 4)। यओदिया और सुन्तुखे ने ''मसीह में बपतिस्मा लिया'' था (रोमियों 6:3; देखें गलातियों 3:27)। ''मसीह यीशु में'' वे परमेश्वर की संतान थीं (देखें गलातियों 3:26)। ''मसीह में'' वे ''मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशिषों'' का आनन्द ले रहीं थीं (इफिसियों 1:3)। ''मसीह यीशु में'' उन पर ''परमेश्वर के प्रेम'' का घेरा था (रोमियों 8:39)। हमारे वर्तमान अध्याय के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि ''मसीह में'' वे ''एक देह'' थीं (रोमियों 12:5)। इसलिए वे ''मसीह यीशु में एक'' होना आवश्यक था (गलातियों 3:28)। ''मसीह में'' होने से उन्हें मिलने का सामान्य आधार मिला था। क्रूस के कदमों में खड़े होकर उस चेहरे की ओर देखते हुए जो उनके लिए मरा था, उन्हें एक-दूसरे के साथ शत्रुता को देखने के बजाय प्रभु की महिमा में हाथ मिला लेने चाहिए थें!

उसने सहायता दी-सक्षम सहायता

मसीही लोगों को अपनी ओर से मतभेद भुलाने की कोशिश करनी चाहिए, पर कई बार उन्हें झगड़े को निपटाने में सहायता की आवश्यकता पड़ती है। स्पष्टतया युओदिया और सुन्तुखे के मामले में पौलुस को ऐसा ही लगा। उसने रोम से उसकी समस्याओं के निवारण की कोशिश नहीं की। इसके बजाय उसने फिलिप्पी में एक भरोसेमंद मित्र से उनके साथ काम करने को कहा: ''और हे सच्चे सहकर्मी मैं तुझ से भी बिनती करता हूं, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर'' (आयत 3क)। अनुवादित शब्द ''सहकर्मी'' (यू.: *suzuge*) जो पूर्वसर्ग *sun* ''के साथ'' zugos की भूमिका है, जिसका अर्थ ''जुआ'' इसका अर्थ ''जो के साथ जुता है'' (देखें KJV; NIV; ASV; RSV)।[8] इसका अनुवाद ''भागीदार'' (CEV; TEV), ''साथी'' (विलियम्स) या इसके समान भी हुआ है।

यह अनुमान लगाने में कि यह ''जुए में साथ जुता'' व्यक्ति कौन था[9] बहुत सा समय और कागज बर्बाद कर दिया गया है।[9] कइयों ने तो *sun or zugos* को मिलाकर सिंज़िगोस नाम भी दे दिया है (देखें CJB)। सुझाव दिया जाता है कि पौलुस फिलेमोन को लिखे अपने पत्र की तरह यहां भी शब्दों का खेल इस्तेमाल कर रहा था (आयत 11)। यह तो एक अर्थ में पौलुस से यह कहलवाएगा कि ''सिंज़िगोस, अपने नाम के अनुसार जीओ।'' परन्तु प्राचीन साहित्य में यह ''नाम'' कहीं नहीं मिलता। यह मान लेना कि पौलुस ने अपने मित्र का नाम नहीं लिया

थोड़ा अजीब लग सकता है, पर प्रेरित ने केवल यहीं पर ही नहीं मुख्य लोगों का नाम नहीं लिया (देखें 2 कुरिन्थियों 8:18, 23)। एलेस मोटायर का यह दिलचस्प सुझाव है: ''*असली साथ में जूता साथी* अनाम रहने दिया गया है,'' सो ज़ोर देने के लिए कि हमें ''परख करने और फिर कलीसिया की सहभागिता में फूट के कैंसर को ठीक करने के लिए चौकस'' रहें ''यहां ... हम अपने नाम डाल सकते हैं।''[10]

हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति कौन था पर बेशक उसे ऐसे मामलों का अनुभव था। अब पौलुस ने उसे इस परिस्थिति में एकता के लिए कहा। कुछ काम कठिन होते हैं पर कुछ और महत्वपूर्ण होते हैं।

सारांश

इस अध्ययन में कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां बताई गई हैं। उम्मीद है कि आपको उन में से कम से कम चार याद होंगे:

- प्रभु चाहता है कि उसके लोग मिल-जुलकर रहें।
- दुख की बात है कि कलीसिया लोगों से बनती है इसलिए नाराज़गियां उठ ही जाती हैं। ''पीनक्स'' कार्टून में निनुन नाम का एक नन्हा पात्र कहता है, ''मुझे मनुष्य जाति से प्रेम है; लोगों के कारण ही मैं खड़ा नहीं हो सकता।'' कलीसिया में, कुछ लोग इसे इस प्रकार बदल देंगे, ''मुझे भाइचारे से प्रेम है; भाइयों के कारण ही तो मैं खड़ा नहीं हो सकता।'' कई बार अच्छे मसीही भी मिलकर वैसे नहीं चलते जैसे उन्हें चलना चाहिए।
- झगड़ा बढने पर उसे निपटाने का सही ढंग भी है और गलत भी। हमारी हर बात और काम में प्रेम, धैर्य और नि:स्वार्थपन होना चाहिए।
- कलीसिया के दो सदस्यों के बीच की समस्या उस मण्डली के हर सदस्य की चिन्ता होनी चाहिए। हमें मेल कराने वाले बनने की कोशिश करनी चाहिए (मत्ती 5:9)।

टिप्पणियां

[1]यह शीर्षक लियोन बार्नस, *दैट यू मे नो क्राइस्ट: स्टडीज़ फ्रॉम फिलिप्पियंस* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 1992), 139 से लिया गया था। [2]गेरल्ड एफ़ हॉथ्रोन, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री* अंक 43; *फिलिप्पियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 177. [3]जे. डब्वाइट पेंटिकॉस्ट, *दि जॉय ऑफ़ लिविंग: ए स्टडी ऑफ़ फिलिप्पियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 173. [4]KJV में इस नाम का पुरुष रूप (''यूओदियास'') इस्तेमाल किया गया है जिससे लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पौलुस एक पुरुष और एक स्त्री को सम्बोधित कर रहा है शायद एक पुरुष और एक स्त्री को। परन्तु मूल धर्मशास्त्र में इस नाम का स्त्रीलिंग रूप है। [5]मूल धर्मशास्त्र में ''सुसमाचार के कारण'' के बजाय ''सुसमाचार में'' है। [6]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971), 303. [7]NASB केवल ''यदि मेरा भाई पाप करे'' है परन्तु यहां पाप सम्भवतया उसके विरुद्ध है जिससे बात की जा रही है (देखें KJV)। [8]यदि आप वहां रहते हैं जहां जानवरों को इकट्ठे जुए में बांधा जा सकता है तो आप इस रूपक के महत्व की चर्चा कर सकते हैं। [9]अनुमानों में लूका, सीलास और इपफ्रुदीतुस शामिल हैं पर यह केवल अनुमान है। कइयों ने इसे स्त्री बनोन की कोशिश की है पर ''साथ जुता साथी'' विशेषण पुलिंग रूप में है। कुछ लोग इस अज्ञात ''व्यक्ति'' को

मण्डली के सभी सदस्यों के लिए मान लेंगे जो स्त्रियों की सहायता करने की कोशिश करते थे। इस पत्र में और हर जगह जहां पौलुस के मन में कलीसिया के सभी लोग थे, उसने एक वचन नहीं बल्कि बहुवचन इस्तेमाल किया, सो यह सम्भावना कम ही लगती है। [10]अलेस मोटायर, द *मैसेज ऑफ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1984), 204.